بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह कहता हैः
“ख़बरदार अल्लाह ही के लिए ख़ालिस दीन है।”
(जुमर : 3)

इस्लाम
ख़ालिस क्या है?

मौलाना मुहम्मद इस्माईल ज़रतारगर (रह्महुल्लाह)

(हिन्दी रूप)
एजाज़ शफ़ीक़ रियाज़ी

मकतबा फैज़–ए–आम
सदर बाज़ार कैन्ट बरेली

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम

लम्हा-ए-फ़िक्र

आज कल के कुछ मुसलमान क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने वालों को नया फ़िरक़ा (गिरोह) और नए मज़हब के नाम से बुलाते हैं और फिर इस से आगे बढ़कर चारों इमामों में से किसी एक इमाम की तक़्लीद न करने वालों को ग़ैर मुक़ल्लिद और इस्लाम के दाएरे से बाहर होने का नाम देते हैं और न मालूम किन किन नामों से बुलाते हैं। आख़िर इस क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने की बुनियाद कब से है ?

आम लोगों की जानकारी के लिए इस किताब को सहीह हवालों और सालों की तरतीब से पेश किया जा रहा है। इस किताब का मक़्सद सिर्फ़ शुरूआत के सालों को बतलाना है कि क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल कब से है और तक़्लीदे शख़्सी (किसी एक शख़्स की बात को बिला दलील मानना) कब से शुरू हुई। साथ ही चार इमामों के नाम पर चार मस्लक कब से और यह किस तरह इस्लाम में दाख़िल किए गए। फिर इसके बाद तद्वीने हदीस़ (हदीस़ों का जमा किया जाना और लिखा जाना) और तद्वीने फ़िक़्ह (फ़िक़्ह का लिखा जाना) कब से शुरू हुआ। इसके अलावा इमामों के अक़्वाल को पेश कर के तफ़्सील के साथ लिखा गया है ताकि इसे जांचा जाए कि पुराने कौन है और नया क्या है ?

अकस़र उलमा-ए-सलफ़ ने फ़िरक़ों के बारे में बड़ी बड़ी किताबें लिखी हैं, लेकिन हमें उन तफ़्सीलात में जाना नहीं है।

इस्लामी भाइय्यो ! मेरी आप से सिर्फ़ यही गुज़ारिश है कि इख़्लास की बुनियाद पर, तअ़स्सुब और दुश्मनी की चादर को हटा कर, इस्लाह की निय्यत रखते हुए, इन्साफ़ के साथ ग़ौर व फ़िक्र करें और मज़हब या मस्लक के नए और पुराने होने का जाएज़ा लें।

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ का मक्की और मदनी दौर 23 साल, ख़ुलफ़ाए राशिदीन ؓ का दौर 30 साल और सहाबा ؓ का दौर तक़रीबन 60 साल रहा। इस तरह तक़रीबन इन सारे लोगों का दौर सन 1 हिज्री से सन 110 हिजरी तक रहा। वे सब के सब मुसलमान अल्लाह की वह्य यानी क़ुर्आन और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत और आप के फ़रमान की पैरवी करते थे, यानी क़ुर्आन और हदीस़ पर उनका अ़मल था। यह पहली सदी के मुसलमान, इस्लाम पर मरने वाले और इस्लाम को चाहने वाले लाखों की तादाद में थे।

इनके बारे में एक सवाल ख़ुद बख़ुद पैदा होता है कि वे मुसलमान किस इमाम के मुक़ल्लिद थे? और किस इमाम के नाम से पुकारे जाते थे? क्या वे मुसलमान हनफी, मालिकी, शाफ़ई या हम्बली थे?

दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि क्या इन इमामों के अलग-अलग मज़ाहिब उस वक़्त पाए जाते थे?

तीसरा सवाल यह पैदा होता है कि पहली सदी के मुसलमान, रसूल की उम्मत, ख़ुलफ़ाए राशिदीन और सहाबा ؓ, जो क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करते थे, तो आज कल के कुछ मुसलमानों के कहने के मुताबिक़ यह इल्ज़ाम उन पर भी लग सकता है?

इन सारे सवालों का जवाब हर हाल में "नहीं" में ही होगा। क्यूंकि पहली

सदी हिजरी में चारो इमामों का नाम व निशान ही न था और न उनकी पैदाइश ही हुई थी। ऐसी सूरत में यह बात साबित हो गई कि तक़्लीदे शख़्सी और इमामों की निस्बत और इमामों के मज़ाहिब पहली सदी में नहीं पाए जाते थे, इस बात की सच्चाई दोपहर के सूरज की तरह चारो इमामों की तारीख़े पैदाइश से साबित होती है। चुनांचे अबू हनीफ़ा रह. सन 80 हिजरी में पैदा हुए और इमाम मालिक रह. सन 93 हिजरी में पैदा हुए और दूसरे इमाम, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हम्बल रह. दूसरी सदी हिजरी में पैदा हुए हैं।

तो ऐसे बे-बुनियाद इलज़ाम लगाने वालों को तौबा करनी चाहिए और इस तरह की गुस्ताख़ी से अपने आप को रोक लेना चाहिए। नामालूम इस क़िस्म के लोग क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां क्या जवाब देंगे जबकि दुनिया में उनके पास कोई जवाब नहीं।

इस तफ़्सील से साफ़ ज़ाहिर है कि :

इस्लाम नाम है क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने का।

इस्लाम महदूद है क़ुर्आन और हदीस़ के दाएरे में।

इस्लाम मुकम्मल दीन है, इसकी तस्दीक़ अल्लाह की किताब क़ुर्आन से होती है। अल्लाह तआ़ला ने हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के आख़िरी हज के मौक़े पर यह आयत :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَ
رَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

{आज मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और तुम पर

अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हो गया।} (सूरतुल माइदह 5:3)

नाज़िल फ़रमा कर इस्लाम के मुकम्मल होने की मुहर लगा दी, इसका कोई मुसलमान इन्कार नहीं कर सकता। इसलिए इस आयत की मौजूदगी में किसी मुसलमान को हरगिज़ यह हक़ नहीं हो सकता कि इस्लाम में कोई नई चीज़ दाख़िल करे या कोई चीज़ इस्लाम से निकाले या किसी चीज़ की कमी समझ कर उसमें कुछ बढ़ाएं। अगर कोई मुसलमान इस्लाम में इस क़िस्म की बुरी हरकत करेगा तो वह नऊज़ुबिल्लाह इस आयत का इन्कार करने वाला होगा और ऐसे लोगों का क़ियामत में क्या अंजाम होगा, ज़रा ग़ौर करें?

अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में बार बार ताकीद के साथ कई जगह फ़रमाया :

﴿أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ﴾

{फ़रमांबरदारी करो अल्लाह की और फ़रमांबरदारी करो रसूल की} (सूरतुत् तग़ाबुन 64:12)

और रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है :

मूसा अलैहिस सलाम की उम्मत में 72 फ़िरक़े थे। मेरे बाद मेरी उम्मत में 73 फ़िरक़े होंगे, जिन में से 72 फ़िरक़े जहन्नमी होंगे और एक फ़िरक़ा जन्नती होगा। सहाब-ए-किराम ﵃ ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ वह कौनसा फ़िरक़ा होगा? आप ने फ़रमाया : जिस राह पर मैं हूं और मेरे सहाबा हैं।

पस जब कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ ने जन्नत के रास्ते की पहचान साफ़ तौर पर बतला दी है, तो फिर हमें दूसरे रास्ते की ज़रूरत बाक़ी न रही। इसके बावजूद अगर कोई शख़्स किसी उम्मती के तौर तरीक़े को अहमियत देता हो और उस पर अ़मल करता हो तो वह किस मक़ाम को हासिल करता है ख़ुद अपनी अ़क़्ल से फ़ैसला कर लें।

मेरे प्यारे दोस्तो ! इससे साफ़ मालूम हुआ कि इस्लाम सिर्फ़, कुर्आन और हदीस़ है। इस पर अ़मल करने वाला दुनिया और आख़िरत में कामियाबी का हक़दार है। यह इस्लाम की शुरूआत ही से है, कोई नया मज़हब नहीं है और ना ही नया फ़िरक़ा है, बल्कि यह एक जमाअ़त है जो कुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करती है।

जब तद्वीने हदीस़ के बारे में हम ग़ौर करते है तो पता चलता है कि हदीसों का जमा किया जाना नुबुव्वत के दौर ही से शुरू हुआ है। हदीस़ का एक बड़ा मज्मुआ़ नुबुव्वत के दौर में मौजूद था। इसके बाद एक दूसरे से ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन और सहाब-ए-किराम ﷺ के पास पहुंचता रहा। किसी ने लिख लिया, तो किसी ने ज़बानी याद कर लिया। अगर यह न होता तो कुर्आन और अल्लाह के रसूल की सुन्नत पर अ़मल करना ना मुम्किन था ; इसलिए पहली सदी हिजरी में हदीस़ का मजमुआ़ पाया जाना साबित है।

इसके बाद दूसरी सदी में चारों इमामों और मुहद्दिसीन ने और भी हदीसों को इकट्ठा करके हदीस़ की किताबें लिखी हैं। यह बात साबित हो चुकी है और दुनिया के सभी उलमा-ए-किराम ख़ास और आ़म इसकी तस्दीक़ करते हैं और इससे मुत्तफ़िक़ हैं।

दूसरी और तीसरी सदी हिजरी का दौर इमाम और मुहद्दिसीन का रहा, उस वक़्त अगर कोई मस्अला पेश आता तो लोग इमामों से पूछते, वे क़ुर्आन और हदीस से या अपनी राय और क़ियास (अंदाज़े) पेश करते हुए अल्लाह के डर और तक़्वे की बिना पर साफ़ बता देते थे कि अगर यह क़ुर्आन और हदीस के ख़िलाफ़ हो, तो इसे छोड़ दो। इस लिहाज़ से गोया सभी इमामों और उस दौर के मुसलमान क़ुर्आन और हदीस पर ही अ़मल करते थे। सभी इमामों ने अच्छी और सच्ची बातें कही हैं। उनकी कही हुई बातें क़ाबिले एहतिराम हैं जो आगे किताब में लिखी गई हैं। वह अइम्मा इबादतगुज़ार और मुत्तक़ी, परहेज़गार और तौहीद परस्त, सुन्नत की पैरवी करने वाले क़ुर्आन और हदीस के पाबन्द, सलफ़े सॉलिहीन का नमूना थे। किसी ने भी अपनी तक़्लीद और फ़िरक़ा बन्दी की तरफ़ नहीं बुलाया है और ना ही कोई अपनी तरफ़ से अलग-अलग मज़हब और मस्लक बना कर के जारी किया। इसलिए उनके अक़्वाल के मुताबिक़ -

अगर हो मुक़ल्लिद तो अ़मल करके बताओ

बनते हो वफ़ादार तो वफ़ा करके बताओ

अल्लाह तआ़ला अइम्मा-ए-कराम की क़ब्रों को नूर से भर दे और उन्हें अपनी रहमत से नवाज़े, आमीन।

मेरे प्यारे भाइय्यो ! पहली सदी तो क्या तीसरी सदी में भी तक़्लीदे शख़्सी और इमामों की तरफ़ निस्बत के नाम का फ़िरक़ा हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, हम्बली का वजूद ही ना था। होश व हवास से कहो कि नया क्या है और पुराना क्या है?

चौथी सदी से तक़्लीदे शख़्सी की शुरूआत हुई, मगर इमामों के नाम पर बनें मसलकों का वजूद अ़मल में ना आया था। यहां यह बात मान लेनी होगी कि चौथी सदी हिजरी में भी इन इमामों के नाम पर बनें मसलकों का नाम कहीं दूर दूर तक न था।

अब फ़िक़्ह की किताबों की शुरूआत कब से हुई है इसे पेश किया जा रहा है, इसके बाद तक़्लीदे शख़्सी की निस्बत और आगे तफ़्सील से पेश की जाएगी।

फ़िक़्ह की पहली किताब क़ुदूरी 428 हिजरी में लिखी गई है, इसके बाद दूसरी और फ़िक़्ह की किताबें लिखी गईं। इस तरह फ़िक़्ह कि किताबों का लिखा जाना पांचवीं सदी से शुरू हुआ है। अगर हम तारीख़ पढ़ें और देखे तो पता चलता है कि हदीसों के जमा करने और लिखे जाने कि बुनियाद इस्लाम के शुरूआती दौर ही से है और इस्लाम की बुनियाद भी क़ुर्आन और हदीस़ ही है। लिहाज़ा क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल पुराने ज़माने से होना सूरज की रौशनी की तरह साफ़ है।

तक़्लीदे शख़्सी के बारे में और तफ़्सील यह है कि चौथी सदी या छटी सदी हिजरी तक तक़्लीद का सिलसिला जारी रहा। जब इसकी रफ़्तार दिन ब दिन बढ़ती गई तो उस वक़्त के बादशाहों का भी झुकाव तक़्लीद की तरफ़ होता गया। यहां तक कि 665 हिजरी में बादशाहों की तरफ़ से अकस़र जगहों पर फ़िरक़ा बन्दी के साथ इमामों के नाम पर हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, हम्बली मज़हब के चार क़ाज़ी मुक़र्रर हुए। इस लिए सातवीं सदी से इन नामों की निस्बत लोगों के सामने आई और तक़्लीदे शख़्सी का दौर शुरू हुआ। इस तरह इन नए फ़िरक़ों और मज़हबों को सातवीं सदी में इस्लाम में दाख़िल किया गया। यहां एक

ख़ास बात ग़ौर करने की यह है कि सातवीं सदी में एक ख़ालिस इस्लाम के चार हिस्से कर के फ़िक़्ह की किताबों को मज़हबे अइम्मा पर तरतीब दे कर मज़हब का एक एक हिस्सा, इमामों की तक़्लीद करने वालों ने अपना लिया। और हैरत की बात तो यह है कि इसको पुराना क़रार दिया जाता है और इस्लाम की शुरूआत से सातवीं सदी तक के क़ुरआन और हदीस़ पर अ़मल करने वालों को नया फ़िरक़ा कहने कि हिम्मत करने लगते हैं, यह किस क़द्र ना-इन्साफ़ी की बात है।

जान रखो और यक़ीन करो कि आख़िरत की पहली मंज़िल क़ब्र है जिसे आख़िरत के इम्तिहान का पहला परचा कहना ग़ैर मुनासिब न होगा। जिस में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तीन सवाल किए जाएंगे जिन में यह हरगिज़ न पूछा जाएगा कि तेरा मज़हब किस इमाम का है? और तेरा इमाम कौन है? बल्कि तीन सवाल वही होंगे जो हमारे नबी, मुहम्मद ﷺ ने बतलाए हैं :

तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? तेरा नबी कौन है?

इनके जवाब यूं देने होंगे और यह जवाब भी अल्लाह के रसूल ﷺ ने साफ़ साफ़ बतला दिए हैं :

मेरा रब अल्लाह है। मेरा दीन इस्लाम है। मेरे नबी अल्लाह के बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ हैं। (अहमद/अबू दावूद)

इस तरह क़ब्र में पूछे गये सवालों के जवाब से कामियाबी होगी और क़ब्र के अ़ज़ाब से छुटकारा मिलेगा। इन सवालों के सहीह जवाब उसी को नसीब होंगे जिस ने दुनिया की ज़िन्दगी में सिर्फ़ इस्लाम पर अ़मल किया हो। और अगर इसके बर-ख़िलाफ़ अ़मल किया हो तो ज़ाहिर है कि

जवाब भी ख़िलाफ़ ही होंगे। ऐसी सूरत में क़ब्र का अ़ज़ाब क़ियामत तक होता रहेगा। इसके बाद हिसाब किताब का दिन आएगा, वहां सब के सब जमा होंगे, हर एक अपने अपने अ़मल के मुताबिक़ बदला पाएगा, उस वक़्त कोई किसी के काम न आएगा। हां, क़ुरआन और हदीस़ के मुताबिक़ किए गए नेक और अच्छे आ़माल ही कामियाबी का ज़रिया बनेंगे। नबी करीम ﷺ फ़रमाते है कि

> (रोज़े महशर में) मैं अपने हौज़ (कौस़र) पर सब से पहले पहुंचूंगा, जो मेरे पास से गुज़रेगा वह इस हौज़ का पानी पिएगा और जिस ने पी लिया वह कभी प्यासा न होगा। कुछ लोग मेरे पास आएंगे जिन को मैं पहचानता हूंगा और वे भी मुझे पहचानते होंगे, (लेकिन) उनको मेरे पास आने से रोक दिया जाएगा। मैं कहूंगा कि यह मेरे उम्मती हैं। लेकिन मुझ से कहा जाएगा : आप नहीं जानते कि आप के बाद इन लोगों ने क्या क्या नई बातें दीन में निकाली थीं। तो मैं कहूंगा : दूरी हो, दूरी हो, यानी ऐसे लोगों को मैं अपने पास से धुत्कार दूंगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत का ख़ुलासा यह है कि

> हश्र के दिन सारे लोग मिल कर आदम عليه السلام के पास पहुंचकर कहेंगे कि आप अल्लाह तआ़ला के पास हमारी सिफ़ारिश कीजिए। लेकिन वे कहेंगे कि मैं अल्लाह तअ़ला के सामने जाने से डरता हूं, तुम्हारी सिफ़ारिश करने को तय्यार नहीं हूं, तुम सब फ़ुलां फ़ुलां के पास जाओ। तो फिर सारे लोग नूह,

इब्राहीम, मूसा और ईसा अलैहिमुस् सलाम के पास जाएंगे। वे सब के सब यही कहेंगे कि अल्लाह तआला के सामने जाने से हम डरते हैं और हम इस लाइक़ नहीं कि तुम्हारी सिफ़ारिश कर सकें, तुम सब आख़िरी नबी मुहम्मद ﷺ के पास जाओ। आख़ीरकार मुहम्मद ﷺ के पास पहुंचेंगे तो आप सिफ़ारिश करने पर राज़ी हो कर अल्लाह के दरबार के मक़ामे महमूद में सजदे में गिर जाएंगे और दुआ करेंगे। अल्लाह की इजाज़त से शफ़ाअत करके जन्नत में पहुंचाएंगे। (बुख़ारी)

इन हदीसों से साफ़ दिखाई देता है कि हौज़े कौसर के पानी और रसूल ﷺ की सिफ़ारिश उन लोगों को ही नसीब होगी जिन्होंने आपकी फ़रमांबरदारी करते करते अपनी आख़री सांस छोड़ी होगी।

ग़ौर करो! जब अल्लाह तआला के ख़ास पैग़म्बरों से किसी की सिफ़ारिश न हो सकी तो फिर हमारे तुम्हारे जैसे उम्मती का क्या शुमार, किस गिनती में होंगे। ग़रज़ कि सिर्फ़ हमारे नबी मुहम्मद ﷺ ही सिफ़ारिश कर सकेंगे। इसलिए इस्लाम ख़ालिस यही है कि हम रसूल की पैरवी करने वाले बनें, क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करें। इसी में दीन, दुनिया और आख़िरत की भलाई है।

तक़्लीदे शख़्सी के बारे में जब हम देखते है तो इसकी तफ़्सील यूं निकलकर आती है कि सातवीं और आठवीं सदी हिजरी में तक़्लीद का दौर तरक़्क़ी पर रहा और वह इसलिए कि उसके फलने और फुलने में बादशाहों की पूरी मदद शामिल रही। नवीं सदी हिजरी के शुरू में

बादशाह फ़र्ह बिन बर्क़ूक़ ने मक्का बैतुल्लाह के एहाते में मुसल्ला इब्राहीमी के अलावा चार मुसल्ले हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई और हम्बली मज़हब के नाम से क़ाइम कर दिये। हालांकि इस्लाम के शुरू दौर से नवीं सदी हिजरी तक सिर्फ़ एक ही मुसल्ला इब्राहीमी था। इस तरह यह नए चार मुसल्ले बादशाह की राय और हुक्म से इस्लाम में दाख़िल किए गए।

यह मुसल्ले नवीं सदी से तेरहवीं सदी हिजरी तक बरक़रार रहे। तक़लीद करने वाले मुक़ल्लिदीन अपने अपने मुसल्ले पर अपने मसलक के इमाम के साथ नमाज़ अदा करते रहे, एक मुसल्ले के बाद दूसरे मुसल्ले पर नमाज़ अदा करने का इन्तिज़ाम था।

चौदहवीं सदी सन 1343 हिजरी में शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बानी सऊदी हुकूमत ने इस्लाम में नए दाख़िल हो चुके उन चारों मुसल्लों को ख़त्म कर के पहले की तरह सिर्फ़ एक मुसल्ला इब्राहीमी को अपने मक़ाम पर क़ाइम रखा, जो शुरू इस्लाम से था और जो आज तक है। उसी मुसल्ला इब्राहीमी से तमाम नमाज़ें अदा होती हैं, आज कल के हज पर जाने वाले लोगों से इसकी तस्दीक़ की जा सकती है।

मेरे इस्लामी भाइय्यो ! इन सारे वाक़िआत के बयान से यह नतीजा निकलता है कि क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने वाले हक़ पर हैं और शुरू इस्लाम से अब तक उस पर जमे हुए हैं और क़ियामत तक यह जमाअत बाक़ी रहेगी।

आज कल के कुछ मुसलमानों की मिस़ाल गुम्बद में आवाज़ लगाने वालों की तरह है, उनकी आवाज़ लौट कर उन पर ही फ़िट होती है। वे अपने

को पुराना और दूसरों को नया कहने वाले ख़ुद नए बनकर सब के सामने आ गए। यह तो ऐसे हो गया जैसे इल्ज़ाम लगाने वाले ख़ुद मुल्ज़िम बन गए।

मेरे मुसलमान भाईय्यो ! मुसलामन होने पर यह जरूरी होता है कि कुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करें, उसके बग़ैर मुसलमान होने का दावा झूठा है। इस्लाम के शुरू के मुसलमानों का और उस वक़्त से लेकर आज तक के मुसलमानों का अ़क़ीदा एक ही है और वह यह कि अल्लाह एक, कुर्आन एक, रसूल एक। फ़िर आज हम सब मुसलमानों को क्या हो गया कि इस्लाम ख़ालिस कुर्आन और हदीस़ पर अ़मल कर के दीन, दुनिया और आख़िरत की भलाई हासिल नहीं कर पा रहें हैं। क्या आज इस्लाम से दूरी की वजह से हम दुनिया की मुसीबतों और परेशानियों में पड़े हुए नहीं हैं ? क्या अल्लाह तआ़ला की रहमत हम से दूर नहीं है ? क्या यह नक़्शा हमारे सामने नहीं है ? अगर है! तो फ़िर क्यूं न हम अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी ज़िन्दगी बनाएं। आज के दौर में इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि एक दूसरे पर इल्ज़ामात के दरवाज़ों को बन्द कर दें, तंग नज़री को छोड़ दें, कुशादा नज़री से काम लें। इस्लामी तालीम हम से यह चाहती है और मक़्सद भी यही है कि सारे मुसलमान आपस में भाई भाई बन कर रहें, इज्तिमाई ज़िन्दगी बसर करके नेक और एक हो जाएं। अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ अ़मली ज़िन्दगी गुज़ार कर अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें और रहमतें हासिल करें।

आगे इसी मज़मून में नबी ﷺ के ज़माने में हदीसें लिखे जाने की दलीलें और दूसरी हदीस़ की किताबें, फ़िक़्ह की किताबों की तद्वीन, ख़ुलफ़ाए राशिदीन का दौर, इमामों की पैदाइश और मुख़्तसर इमामों की ज़िन्दगी

और उनके अक़्वाल की तफ़्सीलात पेश की गई हैं।

हमारी ज़िम्मादारी हक़ बात को पेश करना है, अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ और हिदायत दे। आमीन

मुहम्मद इस्माइल ज़रतारगर

अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाना

अल्लाह तआ़ला अपने रसूल मुहम्मद ﷺ से फ़रमा रहा है कि

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا﴾

{हमने आप को सारे लोगों के लिए ख़ूशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।} (सूरह सबा 34:28)

इसके बाद अल्लाह तआ़ला अपने रसूल मुहम्मद ﷺ को हुक्म दे रहा है कि आप सारे लोगों को यह ऐलान करें कि

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

{ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूं,} (सूरह अअ़्राफ़ 7:158)

इस के बाद फ़िर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को अल्लाह के दीन की दावत देने वाला बनाते हुए फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾
﴿وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا﴾

{ऐ नबी हमने आप को गवाह, खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा। आप अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसके दीन की दावत देने वाले हैं और रौशन चिराग़ हैं।} (सूरह अहज़ाब 33:45-46)

इस एलान के बाद इस्लाम में दाख़िल होने के लिए इन्सान को कलिम-ए-शहादत (तौहीद) का इक़रार और इसके साथ ही रिसालत का इक़रार करना ज़रूरी होता है। कलिम-ए-शहादत इस्लाम का पहला रूक्न है। इस कलिमे का ज़ुबान से इक़रार करने वाला और दिल से यक़ीन रखने वाला मुसलमान कहलाता है, इसके साथ ही अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर अ़मल करने वाला ईमानदार कहलाता है, गोया अ़मल से कलिम-ए-शहादत की तस्दीक़ होती है।

इसलिए क़ुर्‌आन और हदीस़ पर अ़मल करना मुसलमान की निशानी है।

क़ुर्‌आन और हदीस़ की तारीफ़

क़ुर्‌आन : अल्लाह की किताब को कहते हैं जो लौहे महफ़ूज़ से अल्लाह के हुक्म से जिब्राईल ﷷ के ज़रीए वह्य से हमारे प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ पर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा करके 23 साल की मुद्दत में उतारा गया।

हदीस़ : हदीस़ के लुग़वी माना "बात" के होते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने अपने कलामे पाक क़ुर्‌आन में क़ुर्‌आन को भी हदीस़ कहा है :

﴿اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ﴾

{अल्लाह तआ़ला ने बेहतरीन कलाम उतारा है}

(सूरह ज़ुमर 39:23)

इस आयत में क़ुर्‌आन को हदीस़ कहा गया है।

﴿فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ﴾

{पस अल्लाह तआला और उसकी आयतों के बाद यह किस बात पर ईमान लाएंगे?}(सुरह जासिया 45:6)

इस आयत में क़ुर्आन की आयात को हदीस़ कहा गया है

﴿...فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ﴾

{फ़िर अब इसके बाद किस बात पर ईमान लाएंगे?} (सुरह अअ्राफ़ 7:185)

तश्रीह : अल्लाह की किताब और उसके रसूल के आ जाने के बाद भी यह सच्चे रास्ते पर न आए तो अब किस बात को मानेंगे?

इस आयत में अल्लाह की किताब कुर्आन को हदीस़ कहा गया है।

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ की बात को अपने कलाम पाक क़ुर्आन में हदीस़ फ़रमाया है।

﴿وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا...﴾

जब नबी ने अपनी कुछ बिवीयों से एक छुपी हुई बात कही। (सुरतुत तहरीम 66:3)

अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक क़ुरआन का हदीस़ होना और नबी की बात का भी हदीस़ होना सुरज से भी ज्यादा रौशन है।

इस्लामी इस्तिलाह में मुहम्मद ﷺ की बात, आप ने जो अमल किया, और सहाबा के किसी अमल पर आप ख़ामोश रहे, इन बातों को हदीस़ कहते हैं।

कुरआन और ह़दीस़ इस्लाम की बुनियाद हैं, इसकी तस्दीक़ अल्लाह तआला का कलाम कुरआन पाक करता है।

पहली सदी

नबी ﷺ का दौर :

मुहम्मद ﷺ की नुबुव्वत का ज़माना मक्का मुअ़ज़्ज़मा में 13 साल रहा। इसके बाद अल्लाह के हुक्म से मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत करके मदीना तय्यबा पहुंचे। उसी वक़्त से सन हिजरी की शुरूआत हुई है। मदीना तय्यबा में नबी ﷺ का नबुव्वत का दौर 10 साल रहा।

इस तरह पुरे 23 साल दौरे नुबुव्वत के गुज़रे, इस मुद्दत में इस्लाम के चिराग़ की रोशनी सारी दुनिया में फैल गई, लाखों की तादाद में अ़रब और ग़ैर अरब के मुश्रिक़ीन इस्लाम में दाख़िल होते गए। यह सब के सब मुसलमान अल्लाह की वह्य (क़ुरआन) और रसूल ﷺ के फ़रमान (हदीस़) की पैरवी करते थे। इसके बाद ख़ुलफ़ाए राशिदीन का दौर तक़रीबन तीस साल तक रहा, जिसकी तफ़्सील नीचे लिखी जा रही है।

ख़ुलफ़ाए राशिदीन का ज़माना (मिश्कात जिल्द 4 पेज 59)

1 अबू बक्र सिदीक़ رضي الله عنه का खिलाफ़त का दौर : सन 11 हिजरी से 13 हिजरी (2 साल, 3 महिने, 9 दिन)

2 उ़मर फ़ारूक़ رضي الله عنه का दौरे ख़िलाफ़त : सन 13 हिजरी से 23

हिजरी (10 साल, 5 महिने, 4 दिन)

3 उ़स्मान ग़नी ﷺ का दौरे ख़िलाफ़त : सन 23 हिजरी से 35 हिजरी (12 साल)

4 अ़ली ﷺ का दौरे ख़िलाफ़त : सन 35 हिजरी से 40 हिजरी (4 साल, 9 महिने)

इस तरह मुकम्मल दौरे ख़िलाफ़त 29 साल, 5 महिने, 13 दिन तक रहा।

इस दौर के सभी मुसलमान सिर्फ़ अल्लाह की वह्य (क़ुरआन) और सुन्नते रसूल ﷺ (हदीस़) पर अ़मल करते थे। सहाबा किराम ﷺ का दौर सन 40 हिजरी से 100 हिज्री तक रहा यानी तक़रीबन साठ साल।

इस पहली सदी के आख़िरी सहाबा किराम ﷺ की तफ़्सील नीचे लिखी जा रही है।

1 मदीना तय्यिबा के सहाबा में सह्ल बिन सअ्द ﷺ ने सन 88 हिजरी या 91 हिज्री, 96 साल या 100 साल की उम्र में वफ़ात पाई। (रिवायत में इख़्तिलाफ़ है)

2 बसरा के सहाबा में अनस बिन मालिक ﷺ ने सन 90 या 93 हिजरी, ज़्यादा से ज़्यादा 103 साल की उम्र में वफ़ात पाई। (रिवायत में इख़्तिलाफ़ है)

3 मक्का मुअ़ज़्ज़मा के सहाबा में अबुत् तूफ़ैल आमिर बिन वासि़ला ﷺ सब से आख़री सहाबी थे जिन्हों ने सन 100

हिजरी या 110 हिजरी में वफ़ात पाई (रिवायत में इख़्तिलाफ़ है)।

इस तरह पहली सदी के ख़त्म होने के साथ ही सहाबा किराम ﷽ का दौर भी ख़त्म हुआ। पहली सदी के यह सारे मुसलमान क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करते थे, इस्लामी तअ़लीम इन्हीं दोनों किताबों से ली जाती थी, इसके अलावा कोई दूसरी चीज़ न थी।

नबी ﷺ के ज़माने में हदीस़ों के लिखे जाने और जमा किए जाने की दलीलें

रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में क़ुर्आन मजीद की तरह हदीसें भी लिखी जाती थीं, इसका बड़ा एहतिमाम व इन्तिज़ाम था।

1. इल्म और हदीस़ को लिख कर महफ़ूज़ कर लिया करो। (हाकिम बयानुल इल्म : जिल्द 1, पेज नम्बर 37)
2. हदीसों को लिखो, कोई हर्ज नहीं। (मज्मउज़् ज़वाइद : पेज नम्बर 60)
3. अबू शाह को मेरी हदीस़ और ख़ुत्बा लिख कर दे दो। (बुख़ारी व मुस्लिम)
4. (ऐ अबू राफ़ेअ़) अपने दाएं हाथ से मेरी हदीस़ लिख लिया करो। (तिर्मिज़ी 382)
5. कलिमा के इक़रार करने वाले मुसलमानों का नाम लिख कर मुझे दो (बुख़ारी : जिल्द 1 पेज नम्बर 430)

6. मदीना के यहूदीयों को सहीफ़-ए-अम्न लिखवा कर दिया था। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने और यहूद और दूसरे मुसलमनों के लिए अम्न नामा लिखवा दिया। (सुनन अबी दाऊद : 2, पेज नम्बर 25)

7. हुदैबिया में सुलह नामा लिखवाया गया। (बुख़ारी : जिल्द 1, पेज नम्बर 372)

8. मुहम्मद ﷺ ने अ़ली رضي الله عنه को एक रिसाला लिखवा कर दिया जिस में मदीना का हरम होना, मसाइले जराहात, ऊंटों की उम्र, ज़मीनों के अहकाम, अल्लाह के अलावा के नाम पर ज़िब्ह करने की हुरमत, ज़मीन की चोरी पर लानत, वालिदैन को बुरा कहने पर लानत, बिद्अ़ती को पनाह देने पर लानत वग़ैरा के मसाइल थे।

9. अ़ली رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह ﷺ से कुर्आन मजीद लिखा है और इस सहीफ़ा यानी हदीस़ के इस रिसाले को। (बुख़ारी)

10. इब्ने उ़मर رضي الله عنه कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने किताबुस्सदक़ा लिखवाई, फ़िर आप का इन्तिक़ाल हो गया। यह किताब हाकिमों के पास भेजी न जा सकी कि आप के बाद अबू बक्र رضي الله عنه ने उस पर अ़मल किया। फिर अबू बक्र رضي الله عنه के इन्तिक़ाल के बाद उ़मर رضي الله عنه ने उस पर अ़मल किया। यह किताब उ़मर के ख़ानदान में महफ़ूज़ रही। उ़मर के पोते सालिम رضي الله عنه ने यह किताब इमाम ज़ुहरी रह. को पढ़ने के लिए दी जिसे इमाम ज़ुहरी रह. ने याद कर लिया। उसकी नक़्ल ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने कराई। (अबू

दाऊद, बैहक़ी, मुस्तदरक हाकिम : जिल्द 1 पेज नम्बर 292)

11. मुहम्मद ﷺ ने अपने आख़री ज़माने में हदीस़ की एक बड़ी किताब जिस में कुर्आन की तिलावत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, तलाक़, इताक़ (मुसलमानों को आज़ाद कराना), क़िसास, दियत और दूसरे फ़राइज़, सुनन और बड़े गुनाहों की तफ़्सील लिखवा कर अम्र बिन हज़्म رضي الله عنه नामी सहाबी के ज़रिए यमन वालों के पास भिजवाई थी। (दार कुत्नी, दारमी, बैहक़ी, मुस्नद अहमद, इब्न ख़ुज़ैमा, इब्न हिब्बान, मुवत्ता इमाम मालिक, सुनन नसाई)

    सारे मसाइल के इकट्ठा होने के लिहाज़ से इस किताब को हदीस़ की पहली किताब कहना चाहिए जो मुहम्मद ﷺ ने ख़ूद ही लिखवाई है। इसी तरह अ़रब के सरदारों और ग़ैर अरब के बादशाहों को इस्लाम की दावत के ख़त भेजे थे।

12. बादशाह हिरक़्ल ने रसूलुल्लाह ﷺ का वह ख़त मंगवाया जो आप ने दहिय्या क़ल्बी को सन 6 हिजरी में दे कर बसरा के हाकिम के पास भेजा था। उसने वह हीरक़्ल के पास भिजवाया। (बुख़ारी : जिल्द 1, पेज नम्बर 4)

13. मुआज़ رضي الله عنه के बेटे का इन्तिक़ाल जब मदीना मुनव्वरा में हुआ, तब मुआ़ज़ رضي الله عنه यमन में थे, उन्हें बड़ा ग़म और अफ़्सोस हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुआज़ رضي الله عنه के पास ताज़ियती ख़त लिखवा कर भेज दिया (मुस्तदरक हाकिम, तारीख़े ख़तीब : जिल्द 3 पेज नम्बर 89)

14. अबू हुरैरा رضي الله عنه रिवायत करते है कि सहाबा किराम رضي الله عنهم में मुझ से

ज़्यादा हदीसे रसूल ﷺ को रिवायत करने वाला कोई नहीं है, मगर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضي الله عنه इस से अलग हैं। इसलिए कि वह हदीसों को लिखा करते थे और मैं लिखता नहीं था, सिर्फ़ ज़ुबानी याद कर लिया करता था। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी) अबू हुरैरा رضي الله عنه 5376 हदीसों के हाफ़िज़ थे।

15. बशीर बिन नहीक़ रह. जो एक ताबई हैं रिवायत करते हैं कि मैं अबू हुरैरा رضي الله عنه से हदीसें सुनता था तो लिख लिया करता था। फ़िर जब मैंने उनके यहां से जाने का इरादा किया तो वह किताब लेकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पढ़ कर सुनाया, फिर उनसे पूछा कि यह सब वही हदीसें हैं जो मैंने आप से सुनी हैं? (उन्हों ने) कहा : हां। (सुनन दारमी)

16. रसूलुल्लाह ﷺ ने आख़री बीमारी में कुछ ज़रूरी अहकाम जैसे अरब की ज़मीन से मुश्रिकीन और यहूदीयों को निकालना, वुफ़ूद (जमातों) की ख़ातिरदारी, तजहीज़, उसामा رضي الله عنه के लश्कर की तयारी करना, नबी ﷺ की क़ब्र को सजदा गाह न बनाना और अबू बक्र رضي الله عنه की ख़िलाफ़त वग़ैराह के अहकाम लिखवाने के लिए क़लम, दवात और काग़ज़ मंगवाया। (बुख़ारी : जिल्द नम्बर 1, पेज नम्बर 449 | मुस्लिम : जिल्द नम्बर 2 पेज नम्बर 42)

इस क़िस्म के नबी ﷺ के ख़त बहुत हैं। बात लम्बी हो जाएगी इस डर से मुख़्तसर तौर पर पेश किया गया है। इन सारी बातों से साफ़ नज़र आता है कि मुहम्मद ﷺ अपनी ज़िन्दगी ही में अपनी हदीसों को ख़ास एहतेमाम से ज़रूरत के मुताबिक़ लिखवाया करते थे। बेशुमार सहाबा ने इन हदीसों को जमा किया और उनकी हिफ़ाज़त

की। इसकी और ज़्यादा जानकारी इस तरह है :

17. एक सहीफ़ा "सादिक़ा" के नाम से मशहूर है, जिसे अ़म्र इब्नुल आ़स ﷺ ने तय्यार किया था। इस में हज़ार से कुछ कम हदीसें हैं जो मुस्नद अहमद में मौजूद हैं।

18. एक सहीफ़ा "सहीहा" के नाम से मशहूर है जिसे हम्माम बिन मुनब्बह जो अबू हुरैरह ﷺ के शागिर्द है, उन्हों ने तय्यार किया है। उसकी हदीसें भी मुस्नद अहमद में मौजूद हैं। और इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने भी अपनी किताबों में शामिल की हैं। इसका लिखा हुआ नुस्ख़ा अब तक दिमश्क़ और बरलीन की लाइब्ररियों में महफ़ूज़ है।

19. एक सहीफ़ा "मुस्नद अबू हुरैरह" के नाम से याद किया जाता है। इसमें अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत की हुई सारी हदीसें मौजूद हैं और इसका लिखा हुआ नुस्खा जरमनी की लाइब्ररी में मौजूद है।

20. एक सहीफ़ा, अ़ली ﷺ के नाम से मशहूर है।

21. आप ﷺ के आख़री हज के ख़ुत्बे को ख़ूद रसूलुल्लाह ﷺ के हुक्म से लिखा गया था।

22. एक सहीफ़ा, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ के नाम से मशहूर है, जिसे उनके दो शागिर्द वहब बिन मुनब्बा और सलमान बिन क़ैस लश्करी ने तय्यार किया था।

23. सहीफ़ा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, जिसे अम्र बिन ज़ुबैर ने तय्यार किया था।

24 एक सहीफ़ा अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ के नाम से मशहूर है। इस

सिलसिले में सईद बिन हिलाल रिवायत करते हैं कि अनस ﷺ ने अपना सहीफ़ा हमें दिखलाया और कहा कि यह हदीसें मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनीं और लिख लीं। फ़िर मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को दिखाई और आप ने उनकी तस्दीक़ भी की। (तफ़्सीलात के लिए देखें इक़्बाल कीलानी की किताब इत्तिबा-ए-सुन्नत के मसाइल)

दूसरी और तीसरी सदी

चारों इमामों की पैदाइश

नाम	पैदाइश	वफ़ात	उम्र	साकिन	तस्नीफ़
इमाम अबू हनीफ़ा रह	80हि	150हि	70 साल	कूफ़ा	
इमाम मालिक रह	93हि	179हि	68 साल	मदीना	मुवत्ता मालिक
इमाम शाफ़ई रह	150हि	203हि	54 साल	मिस्र/बग़दाद	मुस्नद शाफ़ई
इमाम अहमद बिन हम्बल रह	164हि	241 हि	77 साल	दिमश्क़	मुस्नद अहमद

दूसरी सदी हिजरी से चारो इमामों का दौर शुरू हुआ। हमारे नबी ﷺ से तरबियत पाने वाले सहाबा किराम ﷺ इस दुनिया से चले गए। आए दिन पेश आने वाले मसाइल का जवाब देने के लिए सहाबा मौजूद न थे। यही वह दौर है जहां से मुसलमानों की आज़माइश शुरू हुई।

अब यही चारों इमाम अपने अपने इलाक़ो में आम लोगों के लिए कामयाबी और हिदायत के लिए रहबर बने हुए थे। इन लोगों के पास कोई मस्अला आता तो कुर्आन और हदीस़ पेश करते या अपनी राए

और क़ियास से काम लेते, और अल्लाह से डरते हुए यह एलान करते कि : सहीह हदीस़ ही मेरा मज़हब है।

1. इमाम अबू हनीफ़ा रह. ने कूफ़ा में ज़िन्दगी गुज़ारीं, जहां के सियासी हालात बहुत खराब थे। कूफ़ा ही वह जगह है जहां हुसैन ﵁ का क़त्ल हुआ, शीओं का मरकज़ था। यहां इमाम साहब को बहुत कम हदीसें हासिल हुई जिसकी वजह से ज़्यादा तर मसाइल वे राए और क़ियास से हल करते थे और साथ ही यह हिदायत दिया करते थे कि : नबी ﷺ की हदीस़ के सामने मेरी बात रद्द कर दो।
2. इमाम मालिक रह. ने मदीना मुनव्वरा में ज़िन्दगी गुज़ार कर ज़्यादा से ज़्यादा नबी ﷺ की हदीस़ों को जमा किया और अपनी किताब का नाम "मुवत्ता" रखा जिसकी वजह से मसाइल में उनकी राए बहुत कम मिलती है।
3. इमाम शाफ़ई रह. का पहला दौर बसरा में और दूसरा दौर मिस्र में गुज़रा। उन्होंने भी ज़्यादा से ज़्यादा नबी ﷺ की हदीस़ों को अपनी किताब में जमा किया और उसका नाम "मुस्नद शाफई" रखा।
4. इमाम अहमद बिन हम्बल भी हदीसों को जमा करने में मशगूल रहे। नबी ﷺ की हदीस़ों का बहुत बड़ा हिस्सा उनके हाथ आया, उन्हों ने अपनी किताब का नाम "मुस्नद अहमद" रखा। इमाम अहमद रह. के सारे मसाइल राए व क़ियास से दूर हैं।

इस तरह चारों इमामों का ज़माना भी तक़्वा के लिहाज़ से कुर्आन और हदीस़ से मसाइल हल करने का था। अगर किसी इमाम की तरफ़ से कोई राए क़ाइम होती तो वह वक़्ती रहती, हदीसे रसूल ﷺ के मिलते ही ख़त्म हो जाती।

चारो इमामों के अक़्वाल

अल्लाह तआला रहमतें नाज़िल फ़रमाए सभी इमामों पर कि उन्हों ने कितनी हक़ बातें कहीं हैं।

इमाम अबू हनीफ़ा (नोअ्मान बिन स़ाबित) रह. के अक़्वाल

इमाम अबू हनीफ़ा रह. कहते हैं :

1. मेरे क़ौल पर फ़तवा देना हराम है जब तक कि मेरी बात की दलील मालूम न हो (मीज़ान लिश् शअ़्रानी | इक़्दुल जीद पेज नम्बर 70)
2. जब मेरा क़ौल क़ुर्आन के ख़िलाफ़ हो, तो उसे छोड़ दो। लोगों ने पूछा जब आप का क़ौल हदीस़ के खिलाफ़ हो? फ़रमाया उस वक़्त भी छोड़ दो। फ़िर पूछा जब सहाबा किराम ﷺ के फ़रमान के ख़िलाफ़ हो तो? कहा तब भी छोड़ दो। (इक़्दुल जीद, पेज 53)
3. जब देखो कि हमारे क़ौल क़ुर्आन और हदीस़ के ख़िालफ़ हैं तो क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करो और हमारे अ़क़्वाल को दीवार पर दे मारो। (मीज़ान लिश् शअ़्रानी | इक़्दुल जीद पेज 53)
4. अबू हनीफ़ा रह. का यह क़ौल सोने के पानी से लिखने के लाइक़ है, वे फ़रमाते हैं : सहीह हदीस़ ही मेरा मज़हब है (इक़्दुल जीद)। जो हदीस़ से स़ाबित हो वह सर आंखों पर है। (ज़फ़रुल अमानी)
5. मेरी तक़्लीद न करना और न मालिक की, और न किसी और की तक़्लीद करना। अहकामे दीन वहां से लेना जहां से उन्होंने लिए हैं, यानी क़ुर्आन और हदीस़ से। (तोहफतुल अज़्या फ़ी बयानिल अबरा)

इमाम साहब की इन बातों से यह दिन के उजाले की तरह साफ़ ज़ाहिर होता है कि इमाम अबू हनीफ़ा रह. का अ़क़ीदा और मज़हब कुर्आन और हदीस़ है, जो मस्अला सहीह हदीस़ से साबित हो वह क़ाबिले अ़मल है। इसके अलावा फ़रमाया कि मेरी तक़्लीद न करना और न ही बग़ैर दलील के मेरी बातों को मानना, सिर्फ़ कुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करना। इमाम मौसूफ़ ने कितनी हक़ बात कही है। अल्लाह तआ़ला उनकी क़ब्र को नूर से भर दे, आमीन।

अक़्वाले इमाम मालिक बिन अनस रह. इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं :

1. दुनिया में कोई शख़्स ऐसा नहीं है कि जिस की कुछ बातें दुरुस्त और कुछ ग़लत न हों। तो उसकी दुरुस्त बातें ले ली जाती हैं और ग़लत छोड़ दी जाती हैं सिवाए मुहम्मद ﷺ के। क्यूंकि इनकी तमाम बातें सहीह और दुरूस्त है और मान ही लेने के लाएक़ हैं। (इक़्दुल जीद पेज 70) आप की सारी ज़िन्दगी की एक बात भी छोड़ने के क़ाबिल नहीं।
2. मैं सिर्फ़ एक इन्सान हूं। कभी मेरी बात दुरूस्त होती है और कभी ग़लत, तो तुम मेरी उस बात को जो कुर्आन और हदीस़ के मुताबिक़ हो, ले लिया करो और उस बात को जो उसके ख़िलाफ़ हो छोड़ दिया करो (जलबुल मन्फ़अ़त पेज 74) (यानी मेरी अंधी तक़्लीद मत करो)
3. पस तुम मेरी राए को पूरे ध्यान से पढ़ो। अगर वह कुर्आन और सुन्नत के मुवाफ़िक़ हो तो कुबूल करो और जब ख़िलाफ़ पाओ छोड़ दो।

इमाम शाफ़ई (मुहम्मद बिन इद्रीस) रह. के अक़्वाल। इमाम शाफ़ई रह. ने फ़रमाया :

1. जब मैं कोई मस्अला कहूं और रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे क़ौल के ख़िलाफ़ कहा हो तो जो मस्अला हदीस़ से स़ाबित हो वही सब से बेहतर है, पस मेरी तक़्लीद मत करो। (इक़्दुल जीद पेज 54)
2. जब सहीह हदीस मिल जाए (तो जान लो कि) मेरा मज़हब वही है। और मेरी बात को हदीस के ख़िलाफ़ देखो तो (ख़बरदार) हदीस पर अ़मल करो और मेरी बात दीवार पर दे मारो।(इक़्दुल जीद 70)
3. इमाम शाफ़ई रह. ने अपनी तक़्लीद और दूसरे की तक़्लीद से मना किया है। (इक़्दुल जीद)

इमाम अहमद बिन हम्बल रह. के अक़्वाल

1. हरगिज़ न मेरी तक़्लीद करना और न मालिक की और न शाफ़ई की और न औज़ाई की और न स़ौरी की। जहां से यह सारे इमाम दीन के अहकाम और मसाइल लेते थे तुम भी वहीं से लेना (यानी कुर्आन और हदीस़ से ही लेना)। (इक़्दुल जीद पेज 70)
2. किसी को अल्लाह और उसके रसूल के साथ कलाम की गुंजाइश नहीं है।(इक़्दुल जीद)

इन चारों इमामों के अक़्वाल से यह बात साफ़ दिखाई देती है कि इन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस़ के मुताबिक़ : "जिस पर मैं और मेरे सहाबा है", रास्ता इख़्तियार करके कुर्आन व हदीस़ पर अ़मल किया और यही उनका मज़हब था। इन चारों बर्जुगों ने अपनी तक़्लीद से मना किया और किसी ने भी अलग मज़हब अपने नाम से शुरू नहीं किया।

नबी ﷺ ने फ़रमाया : सब से बेहतरीन लोग मेरे ज़माने के है, फ़िर वह जो उनके बाद वाले हैं; फिर वह जो उनके बाद वाले हैं। अपने ज़माने के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया। (बुख़ारी)

अ़ल्लामा इब्न हजर रह. फ़त्हुल बारी पारा 14, बाब फ़ज़ाइले असहाबिन्निबी ﷺ में लिखते हुए फ़रमाते हैं तबा ताबईन 220 बरस तक ज़िन्दा रहे। उनके ज़माने में भी किसी ख़ास शख़्स की तक़्लीद और ख़ास शख़्स का मज़हब किसी का न था। चारों इमामों के शार्गिदों ने अपने अपने इमामों से कुछ मसाइल में इख़्तिलाफ़ किया है, इसलिए कि वे मुक़ल्लिद न थे।

अ़ल्लामा सन्द बिन अ़तान रह. लिखते हैं कि सहाबा के ज़माने में किसी ख़ास शख़्स के नाम का मज़हब न था जिस की तक़्लीद की जाती हो। बहर हाल तीन सदियों में तक़्लीद का वजूद न था।

हदीस़ की किताबों की और तफ़्सील

मुहद्दिस़ का नाम	पैदाइश	वफ़ात	उम्र	साकिन	किताब
अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन फ़ज़्ल रह.	180हि	255हि	74साल	समरक़न्द	सुनन दारमी
अबू अ़ब्दुल्लाह बिन इसमाईल बुख़ारी रह.	194हि	256हि	62साल	बुख़ारा	सहीह बुख़ारी
अबू दाऊद सुलैमान बिन अशअ़स़ रह.	202हि	275हि	73साल	बसरा	सुनन अबू दाऊद
अबूलहसन मुस्लिम बिन अलहज्जाज रह.	204हि	261हि	57साल	नीशापूर	सहीह मुस्लिम

अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सौरा तिरमिज़ी रह.	209हि	279हि	70साल	खुरासान तिरमिज़	जामेअ़ तिरमिज़ी
अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा रब्ई रह.	209हि	273हि	64साल	इराक़	सुनन इब्ने माजा
अबू अब्दुर्रहमान बिन अहमद बिन शुऐ़ब रह.	215हि	303हि	88साल	क़ज़वीन ख़ुरासान	सुनन नसाई
अबू हसन बिन अ़ली बिन उ़मर रह.	305हि	385हि	80साल	बगदाद	दार कुली
अबू बक्र अहमद बिन हुसैन रह.	384हि	458हि	74साल	बैहक़ी नीशापूर	बैहक़ी
शेख़ वलीयुद्दीन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़तीब	435हि	516हि	81साल	मर्व तबरेज़	मिश्कात

यहां हदीस़ की सिर्फ़ मशहूर किताबें ही ज़िक्र की गई है, वरना इनके अलावा कई हदीस़ की किताबें लिखी गई हैं।

शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह. के अह़वाल

शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह. की पैदाइश सन 470 हिजरी और वफ़ात सन 561 हिज्री, उ़म्र 91 साल, बग़दाद मे रहते थे, गुनियतुत् तालिबीन, फुतूहुलग़ैब, फ़त्हे रब्बानी यह इनकी लिखी हुई किताबें हैं।

शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने अपनी किताब फुतूहुलग़ैब में कितनी ज़बरदस्त नसीहत और हिदायत फ़रमाई है, ज़रा ग़ौर कीजिए :

"क़ुरआन और हदीस़ को अपना इमाम बना लो और ग़ौर व फ़िक्र के साथ उनका मुताला कर लिया करो, इधर उधर की बहस़ व तक्रार और हिर्स व हवस की बातों में न फ़ंस जाओ।

सिर्फ़ अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत पर अ़मल करो। और यह हक़ीक़त समझ लो कि क़ुरआन के अलावा हमारे पास अ़मल के क़ाबिल कोई किताब नहीं और मुहम्मद ﷺ के सिवा हमारा कोई रहबर नहीं, जिसकी हम ताबेदारी करें। कभी क़ुरआन और हदीस़ के दाएरे से बाहर न हो जाना वरना ख़्वाहिशे नफ़्सानी और शैतानी वसवसे तुम्हें सीधे रास्ते से भटका देंगे। याद रखो इन्सान औलिया अल्लाह के दर्जे पर भी किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल पर अ़मल करने से ही पहुंच सकता है" (फ़ुतूहुल ग़ैब)

तक़्लीदे शख़्सी की तारीफ़

1. तक़्लीद करने वालों की दलील उसके मुजतहिद (इमाम) का क़ौल होता है, न वह ख़ूद तहक़ीक़ कर सकता है और न ही अपने इमाम की तहक़ीक़ पर ग़ौर कर सक्ता है। (मुस्लिमुस् सुबूत मुज्तबाई)
2. तक़्लीद कहते हैं ग़ैर नबी (यानी इमाम व मुजतहिद) के क़ौल को बग़ैर उसकी दलील जाने, मान लेना। (जम्उल जवामिअ़)
3. मुल्ला अ़ली क़ारी हनफ़ी रह. फ़रमाते हैं: ग़ैर नबी (इमाम) के क़ौल को बग़ैर दलील मानना तक़्लीद है (शन्ह क़सीदा इमाली)
4. मुक़ल्लिद की दलील सिर्फ़ उसके इमाम का क़ौल ही है, मुक़ल्लिद सिर्फ़ यही कहे कि मस्अले का हुक्म यही है क्यूं कि मेरे इमाम की राए यही है और जो राए मेरे इमाम की हो मेरे नज़दीक सहीह है (तौज़ीह तलवीह)

5. इमाम का क़ौल मुक़ल्लिद की दलील है। (तौज़ीह)
6. सिर्फ़ इमाम के क़ौल पर अ़मल किया जाए और उसी क़ौल के हिसाब से फ़तवा दिया जाए। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द नम्बर 1)

तक़्लीद का मतलब यह है कि मुक़ल्लिद जिस इमाम की तक़्लीद कर रहा है वह सिर्फ़ उस इमाम के क़ौल पर ही चले, तहक़ीक़ करना या दलील चाहना तक़्लीद को ख़त्म कर देता है। दूसरे लफ़्ज़ों में तक़्लीद की तारीफ़ बयान की जाए तो वह यह होगी कि नबी के अलावा किसी और शख़्स की बातों को बग़ैर दलील के (यानी बग़ैर क़ुरआन और हदीस़ के), शरई हैसियत से मान लेना और अ़मल करना तक़लीद कहलाती है।

चौथी सदी

तक़्लीदे शख़्सी की शुरूआत चौथी सदी में हुई (इअ़्लामुल मुवक़्क़िईन जिल्द 1 पेज नम्बर 222)। तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ पेज नम्बर 202 में है कि रसूल ﷺ के ज़माने से ले कर आने वाले बाद के दोनो ज़मानों तक तक़्लीद का वजूद ही न था, ख़ैरूल कुरून के बाद तक़्लीद का वजूद पाया जाता है। चौथी सदी से छठी सदी तक इसी तरह तक़्लीद का सिलसिला रहा।

आइय्ये अब देखते है फ़िक़्ह की किताबों की शुरूआत कब से हुई।

किताब का नाम	तस्नीफ़	किताब का नाम	तस्नीफ़
1. कुदूरी (फ़िक़्ह की पहली किताब)	428हि	15. ख़ुलास-ए-कीदानी	नवी सदी

2.हिदाया (फ़िक़्ह की मोअ्तबर किताब)	593हि	16. हुलिया	नवी सदी
3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां	छठी सदी	17. बहरूर् राइक़	दसवीं सदी
4. फ़तावा अल वाहिया	छठी सदी	18. ग़ुनिय्यह	दसवी सदी
5. मुनिय्यतुल मुसल्ली	सातवी सदी	19. तनवीरुल अबसार	दसवी सदी
6. क़निय्यह	सातवी सदी	20. ज़ख़ीरतुल उक़बा	दसवी सदी
7. कनजुद् दक़ाइक़	710हि	21. दुर्रे मुख़्तार	1011हि
8.शर्ह वक़ाया	745 हि	22. फ़तावा ख़ैरिय्या	गियारहवीं सदी
9.निहाया	आठवीं सदी	23. फ़तावा आलमगीरी	1118हि
10. इनाया	आठवीं सदी	24. मा ला बुद्दा मिन्हु	1225हि
11. तहावी	आठवीं सदी	25. बहिश्ती ज़ेवर	1225 हि
12. जामिउर् रुमूज़	आठवीं सदी	26. मराक़िउल फ़लाह	तेरहवी सदी
13. फ़त्हुल क़दीर	नवीं सदी	27. उमदतुर रिआया	तेरहवीं सदी
14. बज़ाज़िय्यह	नवी सदी		

ऊपर ज़िक्र की गई फ़िक़्ह की मशहूर किताबों के अलावा भी फ़िक़्ह की कई किताबें लिखीं गईं है, लेकिन बात लम्बी हो जाएगी इस डर से उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया।

सातवीं सदी

सातवीं सदी हिजरी में पहली बार इन चार इमामों के नाम पर बने मसलक के क़ाज़ी मुक़र्रर किए गए और धीरे धीरे तक़्लीद करने वालों की तादाद बढ़ती गई और बादशाहों का रुज्हान भी तक़्लीद ही की तरफ़ होता गया। हर एक बादशाह अपने ख़ियाल का क़ाज़ी मुक़र्रर करता गया और हर एक फ़िरक़ा अपने अपने मज़हब को बढ़ाता गया। यहां तक कि एक दूसरे को नीचा और कमज़ोर करने की कोशीशें करने लगे। आख़िर कार बेबरस ने सन 665 हिजरी में मिस्र और क़ाहिरा में चार मज़हब के चार क़ाज़ी हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई और हम्बली मुक़र्रर किए। यही दस्तूर जारी हो गया और सरकारी तौर पर चारों मज़हब को बरहक़ मान लिया गया। इस तरह बादशाहों की मदद से यह नए पैदा होने वाले मज़हब इस्लाम में दाख़िल किए गए।

दीने हक़ रा चार मज़ाहिब साख़तन्द
रुखना दर दीने नबी अनदाखतन्द

एक दीने इस्लाम के चार टुकड़े कर दिए गए, यह निस्बते अइम्मा निस्बते मज़हब सातवीं सदी से शुरू हुई। इस तरह आठवीं सदी भी इसी हाल में गुज़री।

नवीं सदी

चार मुसल्ले बैतुल्लाह शरीफ़ में (इमामों के नाम पर) क़ाइम कर दिए गए। यहां तक की नवीं सदी के शुरू में चराकिया के सुल्तान फ़रह बिन

बरक़ूक़ ने बैतुल्लाह शरीफ़ के इहाते में मुसल्ला-ए-इब्राहीमी के अलावा यह नए ईजाद होने वाले चार मुसल्ले हनफ़ी, मालिकी, शाफ़ई, हम्बली के नाम पर क़ाएम कर दिए। इसके बाद इन चारों मुसल्लों का मुआमला इस्लाम का हिस्सा समझा जाने लगा। अ़ल्लामा शौकानी कहते हैं कि उस ज़माने में अहले इल्म ने इसकी सख़्त मुख़ालिफ़त की (अल-इरशाद पेज नम्बर 58)। यह नए बने चारों मुसल्ले नवीं सदी से तेरहवीं सदी तक बराबर क़ाइम रहे।

चौदहवी सदी

इमामों के नाम पर बने वह चारों मुसल्ले ख़त्म कर दिए गए।

इन मुसल्लों को सऊदी हुकूमत के बानी शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ ने सन 1343 हिजरी में ख़त्म कर के सिर्फ़ एक मुसल्ला, मुसल्ला इब्राहीमी को जो इस्लाम के शुरू ही से था, उसे पहले जैसा बऱकरार रखा जो अब तक मौजूद है और इसी मुसल्ले से ही तमाम नमाज़ें अदा होती हैं।

हमने बुनियादी तौर पर सालों की तफ़्सील के साथ हर तरह से लोगों को बता दिया है। इस सच्ची बात को जान लेने के बाद इन्साफ़ की बात तो यह है कि क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने को लाज़िम पकड़ें, क्यूंकि आख़ीरत की कामियाबी का दारोमदार इसी पर टिका हुआ है। ज़िन्दगी के हर मामले में अल्लाह का हुक्म क्या है और नबी ﷺ का हुक्म क्या है और अ़मल क्या है? इसका ख़याल रख कर अ़मल करें। और इसी तरह का अ़मल जन्नत की तरफ़ ले जाता है, आख़िरकार एक दिन जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।

तो फिर अ़मल का तरीक़ा क्या हो ?

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन फ़रमाता है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

अल्लाह के रसूल की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए एक बेहतरीन और मुकम्मल नमूना है।(सूरतुल अहज़ाब 33:21)

इस शर्त के साथ कि अल्लाह तआ़ला और क़ियामत के दिन पर ईमान हो।

रसूलुल्लाह ﷺ कि इत्तिबा करने की क़ुरआने करीम में बार बार ताकीद आई है।

﴿مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾

जिसने रसूल की इताअ़त की हक़ीक़त में उसने अल्लाह की इताअ़त की।(सूरतुन निसा 4:80)

इस बेहतरीन आयत से रसूलुल्लाह ﷺ की फ़रमांबरदारी को अल्लाह तआ़ला ने अपनी फ़रमांबरदारी कह कर हमारी ज़िन्दगी की रहनुमाई फ़रमाई है। यह अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है कि इस एहसान का हम जिस क़द्र शुक्र अदा करें कम है।

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾

क़सम है तेरे रब की (ऐ मुहम्मद!) यह लोग उस वक़्त तक

हरगिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में आप को हकम न बना लें। फ़िर जब आप फ़ैसला दें दें तो उस से नाराज़ ना हों, बल्कि पूरे तौर पर उसे मान लें।(सूरतुन निसा 4:65)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ﴾

ऐ ईमान वालों इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान की पैरवी मत करो, क्यूंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (सूरतुल बक़रा 2:208)

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾

अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबा करो, अल्लाह भी तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। अल्लाह बख़्शने वाला बड़ा मेहरबान है। (सूरह आले इमरान 3:31)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾

ऐ ईमान वालों, फ़रमांबरदारी करो अल्लाह तआला की और फ़रमांबरदारी करो उसके रसूल की और तुम में से इख़्तियार

रखने वालों की, फ़िर अगर किसी चीज़ में तुम में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसे लौटाओ अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़। अगर तुम्हें अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान है। (सूरतुन निसा 4:59)

﴿وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ﴾

अल्लाह की और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करो और आपस में इख़्तिलाफ़ न करना वरना तुम बुज़्दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (सूरतुल अन्फ़ाल 8:46)

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ﴾

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की इताअत करों और उसके रसूल का कहा मानों और (इनसे मूंह मोड़कर) अपने आमाल को बरबाद न करो। (सूरह मुहम्मद 47:33)

नबी करीम ﷺ के फ़रमान (हदीसें)

1. तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़्दीक उसके मां-बाप और औलाद और सारे लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। (बुख़ारी जि.:1, किताबुल ईमान)
2. जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की गोया उसने मुझ से मुहब्बत की और जिसने मुझ से मुहब्बत की वह मेरे साथ जन्नत में होगा।

(तिरमिज़ी, मिशकात पेज नम्बर 56)

3. जो मेरी सुन्नत से मुंह फ़ेरेगा वह मुझ से नहीं (यानी मेरी उम्मत में उसका शुमार न होगा)। (बुख़ारी व मुस्लिम)

अगर तुम मेरी सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे बल्कि काफ़िर हो जाओगे।

4. मैं तुम्हारें बीच दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं, जब तक तुम उन दोनों को मज़्बूती से थामे रहोगे हरगिज़ गुमराह नहीं होंगे। वह (दो चीज़ें) अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नतें हैं। (मुवत्ता, मिश्कात पेज नम्बर 58)

5. मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जाएंगे सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने इनकार किया। सहाबा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल इनकार किस ने किया? आप ने फ़रमाया: जिस ने मेरी इताअ़त की वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की उसने इनकार किया।(बुख़ारी)

इसलिए क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करने के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इन दलीलों से साफ़ ज़ाहिर है कि मुसलमान की शुरूआत और उसका ख़ातमा यही क़ुर्आन और हदीस़ है।

हमारा वतन जन्नत है

हमारा अस्ल वतन जन्नत है जो हमेशा हमेशा रहने वाली और रहमत की जगह है। अल्लाह तआ़ला ने आदम عليه السلام को बनाकर उनके रहने की जगह जन्नत को क़रार दिया और आदम عليه السلام की पीठ से उनकी औलाद

निकाली। (यानी क़ियामत तक पैदा होने वाली रूहें), और ख़ुद उन्हीं को उनका गवाह बना दिया। जब अल्लाह तआला ने सवाल किया कि क्या मैं तुम्हारा परवरिश करने वाला नहीं हूं? तो सब ने जवाब दिया कि बेशक तू ही हमारा रब है।

और तमाम फ़रिश्तों वग़ैरा को अल्लाह का हुक्म हुआ कि आदम को सजदा करें। इस हुक्म की फ़रमांबरदारी सभी फ़रिश्तों ने की, सिर्फ़ शैतान ने नाफ़रमानी की। जिसकी वजह से वह लानती और अल्लाह के दरबार से बाहर हुआ और जन्नत से निकाला गया। शैतान शुरू से ही इन्सान का खुला दुश्मन रहा है और उसी शैतान ने आदम عليه السلام को अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी पर उकसाया था, जो आदम عليه السلام से अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी हुई। इस बिना पर आदम عليه السلام को उनके पैदाइशी वतन जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया। कुछ मुद्दत के बाद वह तौबा कर के अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार कर इस ख़त्म हो जाने वाली दुनिया से अपने वतन वापस चले गए। इस लिहाज़ से हमारा भी अस्ल वतन जन्नत ही है।

मेरे प्यारे भाइय्यो! हम आख़री नबी मुहम्मद ﷺ के उम्मती हैं और एक बेहतरीन उम्मत के लक़ब वाले हैं। जब हमारा अस्ल वतन जन्नत है, तो क्या यह तमन्ना नहीं है कि हम अपने वतन जन्नत को वापस जाएं?

जवाब सबका एक ही होगा, यह कि बेशक हम अपने वतन जन्नत में जाने के ख़्वाहिशमन्द हैं, तो मेरे भाइयो ! मैं यह कहूंगा कि अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़:

﴿اتَّبِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِن دُونِهِ

أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

तुम लोग उसकी ताबेदारी करो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की ओर से उतारा गया है, उसके सिवा और दूसरे साथियों (मनघड़त सरपरस्तों) की ताबेदारी में न लग जाना। (सूरतुल अअ़्राफ़ 7:3)

इस से यह बात खुल कर सामने आ जाती है कि हम क़ुर्आन और हदीस़ पर अ़मल करके सीधा रास्ता तए करते हुए इस ख़त्म होने वाली जगह से अपने अस्ली वतन जन्नत को वापस हो जाएं।

इस आयत की रौशनी में किसी को यह हक़ हासिल नहीं होता कि क़ुर्आन और हदीस़ को छोड़ कर किसी उम्मती की पैरवी करे। अगर कोई ऐसी ख़िलाफ़ वरज़ी करता है तो वह अपने अस्ली वतन जन्नत के रास्ते से भटक कर जहन्नम की तरफ़ चला जाता है। अल्लाह तआ़ला के नाफ़रमानों और मुश्रिकों का ठिकाना जहन्नम ही है जो हमेशा हमेशा के अ़ज़ाब का मक़ाम है।

मेरे इस्लामी भाइय्यो! संजीदगी से ग़ौर व फ़िक्र करो कि वक़्ती और ख़त्म हो जाने वाली दुनिया के वतन से इन्सान को किस क़द्र मुहब्बत होती है। इसका अन्दाज़ा उसी वक़्त होता है जबकि इन्सान अपने वतन से दूर, दूसरे मक़ाम पर कई साल ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद अपने वतन वापस आता है, तो उसको कितनी ख़ुशी होती है। हालांकि, यह ख़ुशी वक़्ती और ख़त्म होने वाली दुनिया के वतन की है।

ऐ अल्लाह के बन्दो ! हमेशा हमेशा की ख़ुशी का मक़ाम जन्नत है इसके लिए अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करते हुए इस ख़त्म होने वाली दुनिया से अपने अस्ली वतन जन्नत की तरफ़ पलट आओ।

जन्नत की राह

1. अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमारे लिए एक (सीधी) लकीर खींची, फ़िर फ़रमाया : यह अल्लाह की राह है, फ़िर आप ने (सीधी) लकीर के दाएं बाएं चन्द (तिरछी) लकीरें खींची और फ़रमाया : यह राहें हैं इनमें से हर राह पर शैतान है, जो पूकारता है इस राह की तरफ़। फ़िर आप ने कुरआन की यह आयत पढ़ी "यक़ीनन यह मेरा सीधा रास्ता है, सो इसी की पैरवी करो, इसके अलावा किसी दूसरे रास्तों की पैरवी न करो। (अहमद, नसाई, दारमी)। वह नक़्शा इस तरह है

शैतान की राहें   शैतान की राहें

अल्लाह का रास्ता

2. जाबिर رضي الله عنه से रिवायत है, वह कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठे हुए थे कि आप ने एक सीधी लकीर खींची, फ़िर दो लकीरें (तिरछी) इसके दाएं और दो लकीरें (तिरछी) इसके बाएं खींचीं। फ़िर दरमियानी (सीधी) लकीर पर हाथ रख कर फ़रमाया: यह अल्लाह की राह है। (बाक़ी राहें अल्लाह की नहीं)। वह नक़्शा इस तरह है। (इब्न माजा)

शैतान की राहें   शैतान की राहें

अल्लाह का रास्ता

इन दोनों हदीसों और शकलों का मतलब एक ही है। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरमियानी सीधी लकीर को अल्लाह की राह कहा है।

अल्लाह तआला क़ुर्‌आन में फ़रमाता है :

﴿مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللّٰهَ﴾

रसूल की इताअ़त अल्लाह की इताअ़त है। (निसा 4:80)

इस आयत से अल्लाह की राह का पता हो रहा है कि रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी करना उनके नक़्शे क़दम पर चलना ऐसा है जैसे अल्लाह की राह पर चलना है। इसी तरह अल्लाह के रसूल के क़ौल और फ़ेअ़्ल की राह क़ियामत तक राहे अमल है। इस से यह बात बिलकुल साफ़ ज़ाहिर है कि क़ुर्‌आन और हदीस़ ही जन्नत की राह है और इसी पर अ़मल करके जन्नत में दाख़िल हो जाएं।

इस्लामी भाइय्यो ! क़ुरआन व हदीस पर अमल हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद होना चाहिए। इसलिए ज़िन्दगी की सभी मंज़िलें किताब व सुन्नत के मुताबिक़ तए करते हुए आख़िरी सांस छोड़ना ही कामियाबी की मंज़िल है, वह मंज़िल जन्नत है।

मस्लके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है यह सड़क

पैग़ामे इलाही

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا﴾

ऐ ईमान वालो अपने आप को और अपने अहल व अ़याल को जहन्नम की आग से बचाओ। (सूरतुत तहरीम 66:6)

यानी रोज़े क़ियामत उसके बारे में पूछा जाएगा। इस नजात के लिए इस्लामी तालीम व तरबियत से अपने घर वालों को वाक़िफ़ करा के अ़मल करने वाला बनाने की कोशिश करें। यह ख़ान्दान के मुखीया की बहुत अहम ज़िम्मेंदारी है, हिदायत देना अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में है।

पैग़ामे रसूल ﷺ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : बाप अपनी औलाद को जो कुछ देता है उस में सब से बेहतर अ़तिया उसकी अच्छी तालीम व तरबियत है। (तिरमिज़ी, मिश्क़ात)

तश्रीह : वालीदैन का बेहतरीन अ़तिया औलाद की सहीह ता़लीम व तरबियत है। इस्लाम ने बच्चों की तालीम व तरबियत के सिलसिले में बहुत ही ताकीदी हुक्म दिया है। इस हदीस़ के माना यह नहीं कि कोई अ़तिया ही न दिया जाए, जाएदाद विरासत में न छोड़ी जाए। बल्कि अव्वलियत और सब से ज़्यादा अहमिय्यत तालीम व तरबियत को दी जाए।

अपने आमाल को बरबाद न करो।

काफ़िरों और मुसलमानों के अ़माल का जाएज़ा किया जाए तो मैं एक बात कह देना ज़रूरी समझता हूं, वह यह कि आख़िरत का इन्कार करने वाला काफ़िर कितना भी नेक काम करे, उसको आखिरत में स़वाब नहीं मिलता, बल्कि दुनिया में कुछ नसीब हो जाता है। लेकिन आख़िरत का इक़रार करने वाला मुसलमान अगर कुर्आन और हदीस़ के मुताबिक़

अ़मल न करें, तो उसका कोई नेक काम चाहे कितना ही बेहतर हो, वह अल्लाह तआ़ला के पास क़ाबिले क़बूल नहीं होता और न ही उसको जन्नत नसीब होती है।

मेरे प्यारे भाइय्यो ! अब भी वक़्त है ज़िन्दगी को ग़नीमत जानें और अपनी ग़लतियों का इक़रार करके अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें। उसकी रहमत से ना उम्मीद न हो। वह तौबा क़बूल करने वाला और तौबा करने वालों से बहुत ख़ुश होता है। इसलिए तौबा व इस्तिग़फ़ार करने में जल्दी करें, कहीं ऐसा न हो कि सूरज बजाए मश्रिक़ के मग़्रिब की तरफ़ से निकल जाए और जब ऐसा होगा तो उस वक़्त तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। यह बात ख़ूब याद रखो कि वह दिन क़ियामत का होगा, जो अचानक वाक़े होगा। इसका इल्म किसी को नहीं है, उस दिन यहां जैसा करोगे वैसा पाओगे। छोटी से छोटी चीज़ का हिसाब होगा, और उसके मुताबिक़ जज़ा व सज़ा होगी।

यह दुनिया अ़मल करने की जगह है इसलिए बेहतरीन उम्मत का फ़रीज़ा यही है कि इस्लाम ख़ालिस, अल्लाह के और उसके रसूल के पैग़ाम के ज़रीए क़ियामत तक आम लोगों को भलाई का हुक्म देते रहें और बुराई से रोकते रहें। मेरी ज़िम्मेदारी हक़ बात को पेश करना है, अब बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में दुआ़ करता हूं कि !

ऐ दिलों के फ़ेरने वाले तमाम मुसलमान भाइय्यो के दिलों को अपने ख़ास दीने इस्लाम पर अ़मल करने की तरफ़ माइल कर दे और हिदायत नसीब फ़रमा। आमीन, सुम्मा आमीन।

तौहीद में शिर्क की मिलावट (मौलाना हाली रह.)

करे ग़ैर बुत की पूजा तो काफ़िर

जो ठहराए बेटा ख़ुदा का तो काफ़िर।

झुके आग पर बहरे सजदा तो काफ़िर

कवाकिब में माने करिश्मा तो काफ़िर।

मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें

परस्तिश करें शौक़ से जिसकी चाहें।

नबी को जो चाहें ख़ूदा कर दिखाएं

इमामों का रूत्बा नबी से बढ़ाएं।

मज़ारों पर दिन रात नज़रें चढ़ाएं

शहीदों से जा जा के मांगें दुआएं।

न तौहीद में कुछ ख़लल इस से आए

न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए।

वो दीं जिस से तौहीद फैली जहां में

हुआ जल्वा गर हक़ ज़मीन व ज़मां में

रहा शिर्क बाक़ी न वहम व गुमां में

वो बदल गया आकर हिन्दुस्तां में।

हमेशा से इस्लाम था जिस पे नाज़ां

वो दौलत भी खो बैठे आख़िर मुसलमां।